संवत्सर-विचार

डॉ.अवधेश कुमार श्रोत्रिय

सारांशः - ज्योतिषशास्त्र में संवत्सर विचार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।शतपथ ब्राह्मण के कुछ वाक्यों में एक संवत्सर में तीन सौ साठ रात्रियों तथा तीन सौ साठ दिनों की चर्चा की गई हैं। 1 संवत्सर (वर्ष) = 360 रात्रि + 360 दिन, 1 संवत्सर (वर्ष) = 720 अहोरात्र । तैत्तिरीय ब्राह्मण में संवत्सर और तिथि का सम्बन्ध बताया है।चन्द्रमा से संवत्सर की प्राप्ति कही गई है।1 संवत्सर (वर्ष) = 12 पूर्णमासी ।

कुञ्जीशब्दाः - अब्दः- वर्षम्, द्वादशघ्नाः -द्वादशगुणिताः ,सप्त च शतानि विंशतिः -720

संवत्सर शब्द सम् उपसर्गपूर्वक निवासार्थक वस् से बना है।निरुक्त में यास्क ने **संवत्सरः संवसन्तेऽस्मिन्भूतानि**[1] इसमें सभी प्राणी संवास करते हैं ,इस प्रकार संवत्सर संज्ञा दी है।**संवसन्ति ऋतवो यत्र संवत्सरः** शब्दकल्पद्रुमकार ने संवत्सर की व्युत्पत्ति कालवाचक के रूप में स्वीकार की है। शतपथ ब्राह्मण में **ऋतुभिर्हि संवत्सरः शक्नोति स्थातुम्**[2] अर्थात् ऋतुओं के द्वारा ही संवत्सर ठहर सकता है ,ऐसा प्रमाण मिलता है।संवत्सर का सम्बन्ध ऋतुओं से होने के कारण वर्ष,शरद,हेमन्त,वत्सर,संवत्सर,अब्द इत्यादि शब्द प्रयुक्त होते हैं।ऋग्वेद में **किं स ऋधक्कृणवद्यं सहस्रं मासो जभार शरदश्च पूर्वीः**[3] वर्ष के वाचक के रूप में शरद शब्द आया है ,वहाँ शरद का अर्थ ऋतु न मानकर संवत्सर बताया है।कपिष्ठल-कठ संहिता **में संवत्सरो वा अब्दः**[4] एवं **सजूरब्दोऽयवोभिः**[5] वाजसनेयी संहिता में संवत्सर को जल देने वाला कहकर उसके लिए अब्द शब्द का प्रयोग किया गया है। **संवत्सरो य एवं विद्वांसः संवत्सरमुपयन्त्यूर्भुवन्त्येव तस्मात् तूपरा वार्षिकौ मासौ...।**[6] तैत्तिरीय संहिता के एक मन्त्र में संवत्सर तथा वार्षिक शब्दों का एक साथ उल्लेख मिलता है। संवत्सर का सम्बन्ध ऋतुओं से होने के कारण अनेक पर्यायवाची शब्द प्रायः ऋतुओं से सम्बन्धित हैं- वर्ष, शरद, हेमन्त, वत्सर, संवत्सर, अब्द इत्यादि। **शतं जीवेम शरदः।**[7] तैत्तिरीय ब्राह्मण में एक ओर जहाँ वर्ष अर्थ में 'शरद' शब्द मिलता है, वहीं दूसरी ओर संवत्सर के चार अन्य नाम भी कहे गये हैं-**प्रजापतिः संवत्सरो महान्कः।**[8] **प्रजापत्यादयश्चत्वारः शब्दाः संवत्सरनामानि। ते च संवत्सरा नाभ्यामुधेयाः।**[9] **तस्माद् ब्रह्मा पुरस्ताद्धोमसंस्थितहोमेष्वावपेतैकहायनो दक्षिणा स हि संवत्सरस्य प्रतिमा...।**[10] गोपथ ब्राह्मण में वर्ष अर्थ में 'हायन' शब्द आया है। **समानां मास आकृतिः।**[11] ऋक्-संहिता एवं वाजसनेयि-

संहिता के एक अन्य मन्त्र में संवत्सर अर्थ में 'समा' शब्द का प्रयोग हुआ **है। दिनाब्द मास होराणामधिपा... सग्रहोऽयं किमाश्रयाः**।[12] ज्योतिष के सर्वप्राचीन ग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त में भी वर्ष के लिए 'अब्द' शब्द दिखाई देता है। माधवाचार्य ने' कालमाधव' में **सम्यग् वसन्त्यस्मिन्नयनर्त्तुमासादय इति व्युत्पत्तेः**[13] अयन, ऋतु, मास आदि जिसमें सम्यक् रूप से बसते हैं इस प्रकार 'संवत्सर' शब्द की व्युत्पत्ति दी है।

संवत्सर की उत्पत्ति के विषय में शतपथ ब्राह्मण में दो मत प्रतिपादित हैं। प्रथम मतानुसार **आपो ह वाऽइदमये सलिलमेवास .....तदिदं हिरण्यमयमण्डं यावत्संवत्सरस्य वेला तावत्पर्यप्लवत**।[14] पहले सब जल ही जल था। उस समय संवत्सर नहीं था। तप करने से एक हिरण्य अण्डा उत्पन्न हुआ, जो संवत्सर तक तैरता रहा। तब उसमें से प्रजापति उत्पन्न हुआ। **तस्मात्प्रजापतेर्ऋतूत्संवत्सरं प्रजनयति**।[15]

इस प्रजापति के द्वारा ही तत्पश्चात् संवत्सर की उत्पत्ति हुई। **हीन्द्राग्नी द्वन्द्वं हि मिथुनं प्रजननं... संवत्सरं प्रजनयति**।[16] द्वितीय मतानुसार इन्द्र और अग्नि रूपी जोड़े से संवत्सर की उत्पत्ति कही गई है। शतपथ के एक अन्य वर्णनानुसार संवत्सर का जन्म इस प्रकार हुआ - **श्रद्धाया वै देवाः। दीक्षां निरमिमतादित्यै प्रायणीय सोमात्क्रयं.....। संवत्सराच्चतुर्विशमहः। ब्रह्मणोऽभिप्लवं क्षत्रा पृष्ठ्यमग्रेरभिजितमद्यः...। संवत्सराद्दशममहः। प्रजापतेर्महाव्रत स्वर्गञ्लोक... तदेतत्संवत्सरस्य जन्म**।[17]

देवों ने दीक्षा को श्रद्धा में से बनाया, प्रायणीय को अदिति से, क्रय को सोम से, आतिथ्य को विष्णु से, प्रवर्ग्य को आदित्य से, उपसद को स्वधा से उपवास को अग्नि-सोम से, प्रायणीय अतिरात्र को इस लोक से, चौबीसों-दिनों को संवत्सर से, अभिप्लव को ब्रह्मा से, पृष्ठ्य को क्षत्र से, अभिजित् को अग्नि से, स्वरसाम को जलों से, विषुवत् को आदित्य से, विश्वजित् को इन्द्र से, गो और आयु को मित्रावरुण से, दशरात्र को विश्वदेवा से, दशरात्रिक पृष्ठ्य षडह को दिशाओं से, छन्दोमान को इन लोकों से, दश-दिनी को संवत्सर से, महाव्रत को प्रजापति से, उदयनीय अतिरात्र को स्वर्गलोक से। यह है- संवत्सर का जन्म।

सूर्य हमें पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता हुआ प्रतीत होता है, इसी एक चक्कर का समय एक वर्ष होता है। यह भी कहा जा सकता है कि नक्षत्रमण्डल की एक प्रदक्षिणा में सूर्य को जितना समय लगता है, उसे वर्ष या संवत्सर कहते हैं।[18] इस प्रसंग में शतपथ में वर्णन है कि **एष वाऽइदा सर्व पचति। अहोरात्रैरर्थमासैमीसैर्ऋतुभिः संवत्सरेण तदमुना पक्रमये**।[19] **सूर्य** संसार को संवत्सर द्वारा पकाता है **तस्यैतस्य सवत्सरस्यैतत्तेजो य एष तपति.....**।[20]

इसीलिए यहाँ आदित्य को संवत्सर का तेज माना गया है। इसी सन्दर्भ में तैत्तिरीय ब्राह्मण का उल्लेख है कि संवत्सर आदित्य के विस्तार रूप का प्रतिनिधि रूप है क्योंकि आदित्य के गमनागमन से ही संवत्सर की निष्पत्ति होती है।अतः संवत्सर ही आदित्य है। यद्यपि यह संवत्सर

एक सा प्रतीत होता है परन्तु वास्तव में इस संवत्सर के कई रूप (अवयव) हैं- अहोरात्र, अर्धमास, मास, ऋतु और इन अवयवों द्वारा ही संवत्सर की प्राप्ति होती है।

साठ अहोरात्र (30 दिन + 30 रात) → मास → ऋतु → संवत्सर

शतपथ ब्राह्मण में स्पष्टतः कहा गया है कि दिन-रात के चक्र से संवत्सर बनता है। और यह अनन्त संवत्सर निरन्तर घूमता रहता है। वस्तुतः संवत्सर के आरम्भ के विषय में इन दोनों यजुर्वेदीय ब्राह्मणों में भिन्न-भिन्न मत हैं-

1. **तस्यैतद्वारं यदमावस्या चन्द्रमा एव द्वारपरिधानः।**[21] शतपथ के एक वाक्य में अमावस्या से संवत्सर का प्रारम्भ माना गया है। **एषा ह संवत्सरस्य प्रथमा रात्रिर्यत्फाल्गुनी पौर्णमासीः।**[22] यहीं एक दूसरे वाक्य में फाल्गुनी पूर्णमासी को संवत्सर की प्रथम रात्रि अर्थात् मुख कहा गया है। **न पूर्वयोः फल्गुन्योरग्निमादधीत। एषा वै जबन्या रात्रिः।... एण वै प्रथमा रात्रिः संवत्सरस्य। यदत्तरे फल्गुनी। मुखत एवं संवत्सरस्व.....।**[23] शतपथ के इस द्वितीय मत के समान तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र को संवत्सर का मुख कहकर संवत्सर की प्रथम रात्रि माना है तथा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र को संवत्सर की अन्तिम रात्रि कहा है।

उपर्युक्त आधार पर कह सकते हैं कि चाहे संवत्सर का प्रारम्भ अमावस्या से माने या पूर्णमासी से दोनों स्थितियों में फाल्गुनी नक्षत्र की प्रधानता रही है।

काठक संहिता, मैत्रायणी-संहिता, तैत्तिरीय-संहिता, वाजसनेयि संहिता, शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण" एवं तैत्तिरीय आरण्यक के मन्त्रों में कहीं छह नामों की चर्चा हुई है, तो कहीं पाँच नामों की, कहीं-कहीं तो चार नामों का वर्णन भी प्राप्त है। यजुर्वेद के उपर्युक्त वर्णित सभी ग्रन्थों में संवत्सर के नामों में भिन्नता इस प्रकार दिखाई देती है

यजुर्वेदीय ग्रन्थों में संवत्सर के नाम -

काठक-संहिता	संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, अनुवत्सर, उद्वत्सर
मैत्रायणी-संहिता	संवत्सर, 'परिवत्सर, इदावत्सर, उद्वत्सर, वत्सर
तैत्तिरीय-संहिता	संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इदुवत्सर, वत्सर
वाजसनेयि-संहिता एवं शतपथ ब्राह्मण	संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इद्वत्सर, वत्सर
तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं तैत्तिरीय आरण्यक	संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इदुवत्सर, इद्वत्सर, वत्सर

अतः यहाँ संहिता तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के उदाहरणों में कभी इद्ववत्सर के स्थान पर अनुवत्सर, इदुवत्सर तथा उद्वत्सर का नाम आया है, तो कभी वत्सर के स्थान पर उद्वत्सर का उल्लेख मिलता है।

वेदाङ्ग-काल में युग की कल्पना प्राप्त होती है। युग का शाब्दिक अर्थ है जुड़ना अर्थात् अनेक वर्षों का संग्रह। इसी अर्थ का विवेचन इस काल में उपलब्ध ज्योतिष के सर्वप्रथम ग्रन्थ वेदाङ्ग ज्योतिष में प्राप्त है। यहाँ पाँच वर्षों का एक युग माना है। इस एक पञ्चसंवत्सरात्मक युग में 1830 दिन होते हैं और 62 चान्द्र मास होते हैं। वेदाङ्ग ज्योतिष में इस पञ्चसंवत्सरात्मक युग का प्रारम्भ माघशुक्ल प्रतिपदा से और उसकी समाप्ति पौषकृष्ण अमावास्या में बताई गई है। ये पञ्चसंवत्सरात्मक युग के वर्ष संवत्सर, परिवत्सर आदि के नाम से जाने जाते हैं। वेदाङ्ग ज्योतिष में पञ्च-संवत्सरात्मक युग के अवयव के रूप में संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, अनुवत्सर, इद्ववत्सर का ही उल्लेख मिलता है।

पञ्चसंवत्सरात्मक युग के वर्षों के नाम

क्रम	वर्षों के नाम
1	संवत्सर
2	परिवत्सर
3	इदावत्सर
4	अनुवत्सर
5	इद्वत्सर

वैदिक काल-गणना में षष्टिसंवत्सरात्मक युग का प्रचलन था इसीलिए परवर्ती काल में भी ज्योतिष के ग्रन्थों में षष्टिसंवत्सर का उल्लेख मिलता है। यह फलादेश में उपयोगी माना गया है। **द्वादशघ्ना गुरोर्याता भगणाः वर्तमानकैः। राशिभिः सहिताःशुद्धाः षष्ट्या स्युर्विजयादयः।।**[24] इसके बारे में वर्णन है कि जिस संवत्सर की उत्पत्ति बृहस्पति की गति के कारण होती है, उसे बार्हस्पत्य संवत्सर कहते हैं। नक्षत्रमण्डल की एक प्रदक्षिणा को गुरु लगभग बारह वर्षों में पूर्ण करता है। ऐसे पाँच गुरु-वर्षों का एक युग माना गया है। इसमें लगभग साठ सौर वर्ष होने के कारण इसे 'षष्टिसंवत्सर' कहते हैं। इसके संवत्सरों के नाम प्रभव, विभव इत्यादि है। प्रभव से अव्यय पर्यन्त संवत्सरों को 'ब्रह्मविंशति' कहते हैं, क्योंकि इनमें सृष्टि होती है। सर्वजित् से पराभव तक के संवत्सरों को 'विष्णुविंशति' संज्ञा दी गई है क्योंकि इनमें सृष्टि का पालन होता है। प्लवंग से क्षय पर्यन्त संवत्सर रुद्रविंशति के वर्ष कहे जाते हैं,क्योंकि यह संहारक वर्ष है।

षष्टिसंवत्सर-चक्र-

क्रम संख्या ब्रह्मविंशति सृष्टि-वर्ष	क्रम-संख्या विष्णुविंशति पालन-वर्ष	क्रम-संख्या रुद्रविंशति संहार-वर्ष

1	प्रभव	21	सर्वजित्	41	प्लवंग
2	विभव	22	सर्वधारी	42	कीकल
3	शुक्ल	23	विरोधी	43	सौम्य
4	प्रमोद	24	विकृति	44	साधारण
5	प्रजापति	25	खर	45	विरोधकृत्
6	अंगिरा	26	नन्दन	46	परिधावी
7	श्रीमुख	27	विजय	47	प्रमादी
8	भाव	28	जय	48	आनन्द
9	युवा	29	मन्मथ	49	राक्षस
10	धाता	30	दुर्मुख	50	नल
11	ईश्वर	31	हेमलंबी	51	पिंगल
12	बहुधान्य	32	विलम्बी	52	कालयुक्त
13	प्रमाथी	33	विकारी	53	सिद्धार्थ
14	विक्रम	34	शार्वरी	54	रौद्र
15	वृष	35	प्लव	55	दुर्मति
16	चित्रभानु	36	शुभकृत्	56	दुन्दुभि
17	सुभानु	37	शोभकृत्	57	रुधिरोद्गारी
18	तारण	38	क्रोधी	58	रक्ताक्ष

19	पार्थिव	39	विश्वावसु	59	क्रोधन
20	अव्यय	40	पराभव	60	क्षय

देवता के आधार पर वर्गीकरण

देवता के आधार पर भी संवत्सर वर्गीकरण ब्राह्मण ग्रन्थों में देखने को मिलता है।तैत्तिरीय ब्राह्मण के एक वाक्य में इन पञ्चसंवत्सरात्मक युग के वर्षों के अधिष्ठातृ देवताओं के नामों का परिचय मिलता है। इसमें केवल चार देवताओं के नामों की ही चर्चा की गई है। शंकरबालकृष्ण दीक्षित ने अपने ग्रन्थ भारतीय ज्योतिष में गर्ग एवं वराह उक्त वचनों में पाँचवें वर्ष के देवता का वर्णन भी किया है।

क्रम-संख्या	संवत्सर के नाम	तैत्तिरीय ब्राह्मण अनुसार देवता	गर्ग के अनुसार देवता	वराह के अनुसार देवता
1 2 3 4 5	संवत्सर परिवत्सर इदावत्सर अनुवत्सर इद्वत्सर	अग्नि आदित्य चन्द्रमा वायु -	अग्नि आदित्य वायु चन्द्रमा मृत्यु	अग्नि आदित्य चन्द्रमा प्रजापति रुद्र

संवत्सर और अहोरात्र का सम्बन्ध

संवत्सरस्यैवैतदहोरात्राणि संतनोति तानीमानि संवत्सरस्याहोरात्राणि संततान्यव्यवछिनानि... ।[25] शतपथ ब्राह्मण में प्रतिपादित है कि बिना अन्तर के लगातार गुजरते हुए दिन और रात संवत्सर बनाते हैं। **अहोरात्रे वै संवत्सर..... ।**[26] इसीलिए यहाँ दिन-रात को संवत्सर कहकर सम्बोधित किया है।

तस्याहोरात्रे ऽएव प्रतिष्ठा। अहोरात्रयोर्हाय संवत्सरः प्रतिष्ठित श्चन्द्रमा ।[27] शतपथ में संवत्सर दिन-रात पर प्रतिष्ठित माना गया है। यहाँ चन्द्रमा को मिलाने वाला कहा है क्योंकि चन्द्रमा से ही रात और दिन होते हैं। **यो वै स संवत्सरः। प्रजापतिः षोडशकलोऽयमेव ... ।**[28] चन्द्रमा को सोलह कला वाला माना जाता है इसीलिए शतपथ में एक स्थल पर संवत्सर को भी सोलह कला वाला कहा है। इस आधार पर शतपथ ब्राह्मण के कुछ वाक्यों में एक संवत्सर में तीन सौ साठ रात्रियों तथा तीन सौ साठ दिनों की चर्चा की गई हैं।1 संवत्सर (वर्ष) = 360 रात्रि + 360 दिन 1 संवत्सर (वर्ष) = 720 अहोरात्र

इसी प्रकार शतपथ में एक अन्य प्रसंग में वर्ष के तीन सौ साठ अहोरात्रों की उपमा अस्सी ऋचाओं की सात सौ बीस आहुतियों से दी गई है।

1 संवत्सर = 720 अहोरात्र

1 संवत्सर = 80 ऋचाएँ = 720 आहुत्तियाँ

इस प्रकार कुल मिलाकर एक संवत्सर में सात सौ बीस रात-दिन होते हैं। इन सात सौ बीस अहोरात्र को प्रजापति की ज्योतियाँ कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में कहा है-**तस्य वाऽएतस्य संवत्सरस्य प्रजापतेः। सप्त च शतानि विंशतिश्चाहोरात्राणि ज्योतिषि...**। अतः सात सौ बीस रात-दिन रूपी अरों द्वारा ही संवत्सर रूपी चक्र बनता है। द्रष्टव्य है कि यद्यपि तैत्तिरीय ब्राह्मण में अहोरात्र का अनेक बार उल्लेख मिलता है तथापि शतपथ ब्राह्मण के समान यहाँ कहीं भी संवत्सर के सन्दर्भ में तीन सौ साठ दिनों अथवा सात सौ बीस अहोरात्रियों का कथन नहीं हुआ।

सन्दर्भग्रन्थसूची-

1. निरु.4.4.27
2. श.ब्रा.6.7.1.18
3. ऋ.सं.4.18.4
4. कपिष्ठल-कठ-संहिता 34
5. वाज.सं.12.74
6. तै० सं० 7.5.1.2
7. तै० ब्रा० 3.1.2.1
8. तै० ब्रा० 3.10.1.4
9. तै० ब्रा० सा० भा०, (तैत्तिरीय ब्राह्मण सायण भाष्य) पृ० 1185
10. गो.ब्रा. 2.1.17
11. ऋ० सं० 10.85.5
12. सूर्यसिद्धान्त 12.6
13. का.मा.द्वितीय प्रकरण पृ.27
14. श.ब्रा.11.1.6.1
15. श.ब्रा. 4.3.1.6
16. श.ब्रा. 4.3.13
17. श० ब्रा० 12.1.2.1-2-3
18. Year is a period of the earth's revolution round the sun, or more accurately, the interval between one vernal equinox and the next, or one complete mean apparent circumference of the ecliptic of the

sun or mean motion through 360° of longitude.,Swami Satya Prakash Sarasvati, The Critical and Cultural Study of The Satapatha Brahman Delhi, 1988, p. 567

19. श.ब्रा. 10.4.2.19
20. श.ब्रा. 10.2.6.2
21. श.ब्रा. 11.1.1.1
22. श.ब्रा. 6.2.2.18
23. तै. ब्रा. 1.1.2.8
24. सूर्य० सि० 1.55
25. श० ब्रा० 1.3.5.16
26. श० ब्रा० 3.2.2.4
27. श.ब्रा.14.4.3..22

सहायक प्राचार्य स्नातकोत्तर ज्योतिष विभाग, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय,दरभंगा बिहार